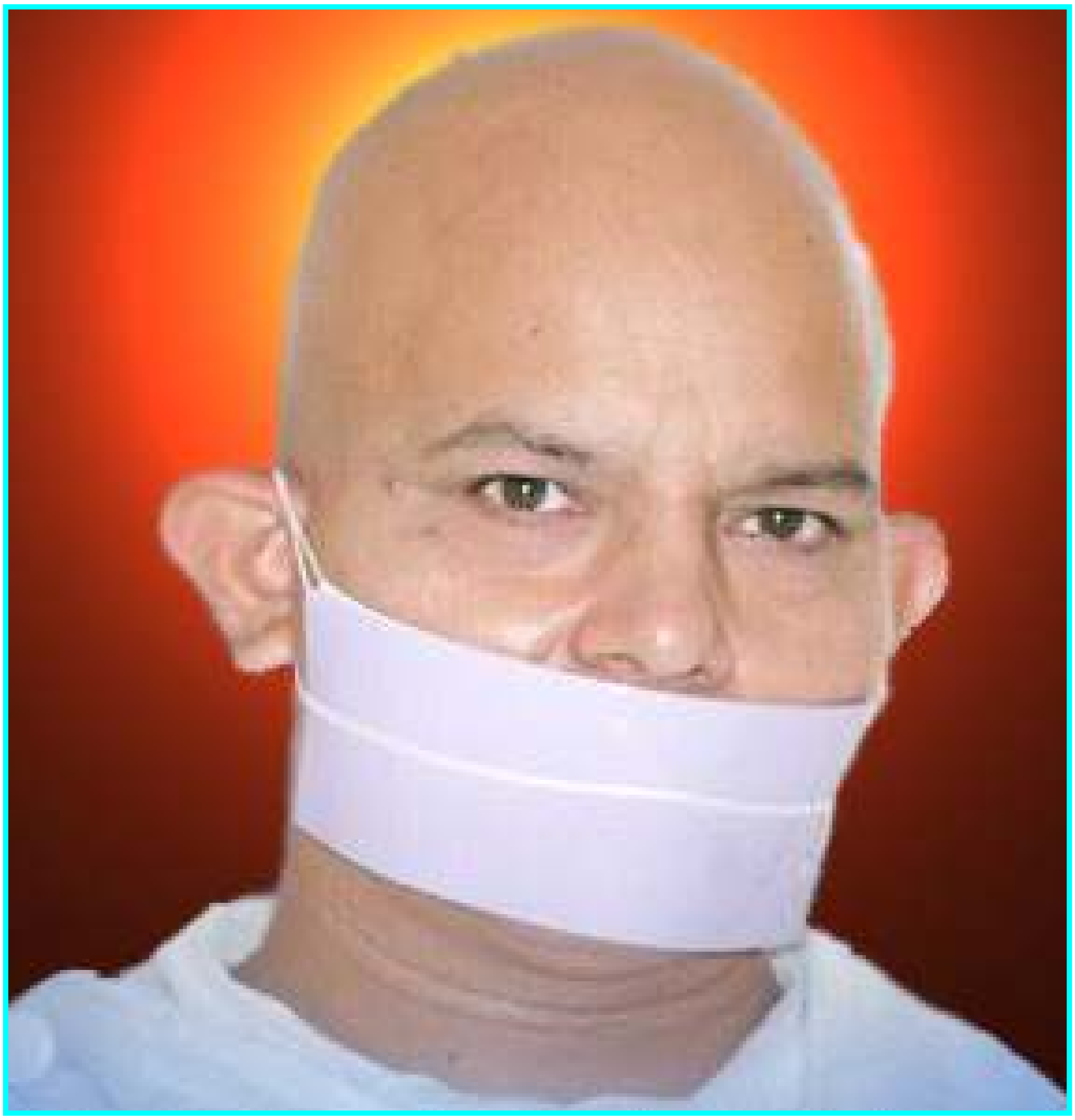

50

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

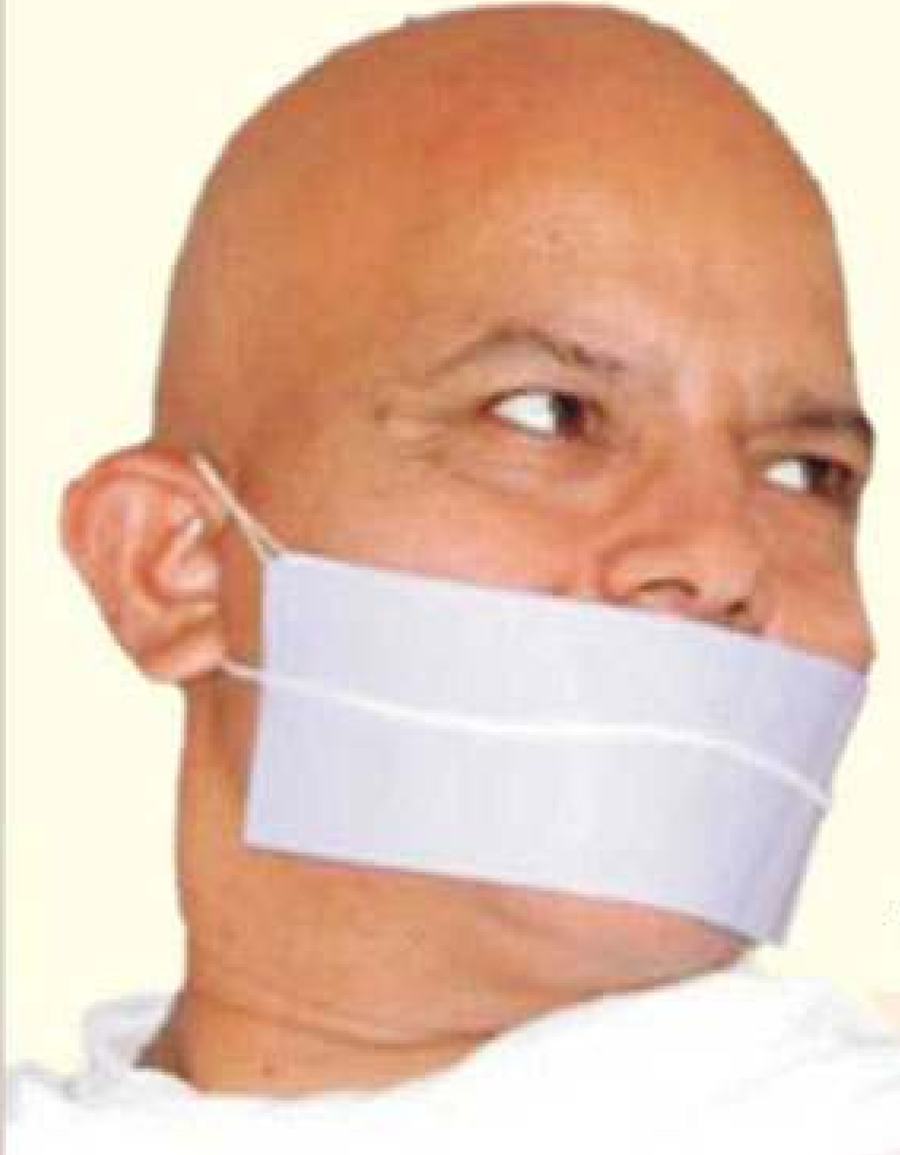

परोपकार को समर्पित ५० वर्ष

अमृत महोत्सव में करणीय कार्य

पंचाचार की आराधना

ज्ञानाचार

1. साधु–साध्वियों, समण श्रेणी द्वारा उत्तराध्ययन का अर्थ सहित वाचन।
2. सप्ताह में एक बार श्रुत सामायिक का प्रयोग। (यथासंभव गुरुवार को)
3. महीने में एक दिन लेखन, वक्तृत्व, गायन के क्षेत्र में दक्षता बढाने के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन। (यथासंभव शुक्ला 9 को)
4. अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत भाषाओं पर कार्यशालाओं का आयोजन।
5. निर्धारित विषयों पर साहित्य सृजन का प्रयास।
6. आचार्य महाश्रमण द्वारा रचित साहित्य का व्यवस्थित प्रकाशन और प्रसार।
7. विश्वविद्यालयों में जैन दर्शन पर व्याख्यान।
8. श्रावक समाज द्वारा श्रावक संबोध : कण्ठस्थ व वाचन।

दर्शनाचार

1. तेरापंथी परिवारों की सार संभाल का अभियान। आस्था का दृढीकरण।
2. दर्शनाचार से संबंधित आचार्य प्रवर की विशेष प्रवचनमाला का आयोजन।

चारित्राचार

1. अधिकाधिक व्यक्तियों को 12व्रती बनाने का प्रयास।
2. नशामुक्ति की प्रेरणा। (विशेष रूप से समाज में)

तप आचार

1. तप – पचरंगी का विधिवत प्रयोग।
2. जप – नमस्कार महामंत्र।

वीर्याचार

1. ज्ञान, दर्शन चारित्र और तप में सलक्ष्य शक्ति का नियोजन।
2. सेवा एवं कला के क्षेत्र में विशेष पुरुषार्थ।

आचार्य महाश्रमण : एक परिचय

आचार्य महाश्रमण उन महान संत–विचारकों में से एक हैं जिन्होंने आत्मा के दर्शन को न केवल व्याख्यायित किया है, अपितु उसे जीया भी है। वे जन्मजात प्रतिभा के धनी, सूक्ष्मद्रष्टा, प्रौढ़ चिंतक एवं कठोर पुरूषार्थी हैं। उनकी प्रज्ञा निर्मल एवं प्रशासनिक सूझबूझ बेजोड़ है। एक विशुद्ध पवित्र आत्मा जिनके कार्यों में करुणा, परोपकारिता एवं मानवता के दर्शन होते हैं तथा जिनकी विनम्रता, सरलता, साधना एवं ज्ञान की प्रौढ़ता भारतीय ऋषि परम्परा की संवाहक दृष्टिगोचर होती है।

13 मई, 1962 को राजस्थान के एक कस्बे सरदारशहर में जन्मे एवं 5 मई, 1974 को दीक्षित हुए आचार्य महाश्रमण अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ की परम्परा में तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

अध्यात्म, दर्शन, संस्कृति और मानवीय चरित्र के उत्थान के लिए समर्पित आचार्य महाश्रमण आर्षवाणी के साथ अध्यात्म एवं नैतिकता, अनुकंपा और परोपकार, शांति और सौहार्द जैसे मानवीय मूल्यों एवं विषयों के प्रखर वक्ता हैं।

वे एक साहित्यकार, परिव्राजक, समाज सुधारक एवं अहिंसा के व्याख्याकार हैं। आचार्य महाप्रज्ञ के साथ अहिंसा यात्रा के अनन्तर आपने लाखों ग्रामवासियों एवं श्रद्धालुओं को नैतिक मूल्यों के विकास, साम्प्रदायिक सौहार्द, मानवीय एकता एवं अहिंसक चेतना के जागरण के लिए अभिप्रेरित किया।

'चरैवेति–चरैवेति' इस सूक्त को धारण कर वे लाखों–लाखों लोगों को नैतिक जीवन जीने एवं अहिंसात्मक जीवन शैली की प्रेरणा देने के लिए पदयात्राएं कर रहे हैं।

अत्यंत विनयशील आचार्य महाश्रमण अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान एवं अहिंसा प्रशिक्षण जैसे मानवोपयोगी आयामों के लिए कार्य कर तनाव, अशांति तथा हिंसा से आक्रांत विश्व को शांति एवं संयमपूर्ण जीवन का संदेश दे रहे हैं।

शांत एवं मृदु व्यवहार से संवृत्त, आकांक्षा–स्पृहा से विरक्त एवं जनकल्याण के लिए समर्पित युवा मनीषी आचार्य महाश्रमण भारतीय संत परम्परा के गौरव पुरुष हैं।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

समय : वैशाख शुक्ला ९ वि.सं. २०६८ से वैशाख शुक्ला ९ वि.सं. २०६९ तक

मार्गदर्शन : महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

आयोजक : श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

चरण	तिथि	दिनांक	स्थान
प्रथम	वैशाख शुक्ला ९ वि.सं. २०६८	१२ मई, २०११	कांकरोली
द्वितीय	भाद्रपद शुक्ला १२ वि.सं. २०६८	९ सितम्बर, २०	केलवा
तृतीय	माघ शुक्ला ६ वि.सं. २०६८२	९ जनवरी, २०१२	आमेट
चतुर्थ	वैशाख शुक्ला ९ वि.सं. २०६९	३० अप्रेल २०१२	बालोतरा

संपर्क सूत्र :